''मीठे बच्चे – सर्विस की नई-नई इन्वेन्शन निकालो, सेवा का विस्तार करो, सेवा के क्षेत्र में माताओं को आगे करना ही सफलता का साधन है''

प्रश्नः- किस मैनर्स के साथ बात करो तो अथॉरिटी के बोल तुम सिद्ध कर सकते हो?

उत्तरः- जब भी किसी बड़े से बात करते हो तो 'आप-आप' कहकर बात करनी चाहिए। तू-तू कहकर नहीं। यह भी मैनर्स है। तुम अपनी अथॉरिटी से बोलो लेकिन रिस्पेक्ट जरूर दो। स्कूल में यह भी मैनर्स सिखलाये जाते हैं। 2-कभी भी अहंकार से बात नहीं करनी चाहिए। ज्ञान के नशे में सदा हर्षितमुख रहो। हर्षित चेहरा भी बहुत सेवा करता है।

गीतः- आज के इस इंसान को...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) एम ऑब्जेक्ट को सामने रख पुरुषार्थ करना है। दैवी मैनर्स धारण करने हैं। एक कान से सुन दूसरे से निकालना नहीं है।

2) विश्व रचयिता बाप हमें पढ़ा रहे हैं, उनके हम स्टूडेन्ट हैं – इस नशे में रहना है। सर्विस की भिन्न-भिन्न युक्तियाँ निकाल उसमें बिजी रहना है।

वरदानः- बाप के दिये हुए खजाने को मनन कर अपना बनाने वाले सदा हर्षित, सदा निश्चिंत भव

आप बच्चों के मनन वा सिमरण करने का चित्र भक्ति मार्ग में विष्णु का दिखाया है। सांप को शैया बना दिया अर्थात् विकार अधीन हो गये। माया से हार खाने की, युद्ध करने की कोई चिंता नहीं, सदा मायाजीत अर्थात् निश्चिंत। रोज़ ज्ञान की नई-नई प्वाइंट स्मृति में रख मनन करो तो बड़ा मजा आयेगा, सदा हर्षित रहेंगे क्योंकि बाप का दिया हुआ खजाना मनन करने से अपना अनुभव होता है।

स्लोगनः- स्व परिवर्तक वह है जिसके अन्दर सदा यह शुभ भावना इमर्ज रहे कि बदला नहीं लेना है बदलकर दिखाना है।

''मीठे बच्चे – भोलानाथ बाबा आये हैं भक्तों को भक्ति का फल देने, उन्हें अगम-निगम का भेद सुनाकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा देने''

प्रश्नः- 21 जन्मों के लिए राजाई पद की प्राप्ति किन बच्चों को होती है? प्रजा में कौन जाते हैं?

उत्तरः- जो मातेले बन बाप पर पूरा-पूरा बलिहार जाते हैं उन्हें राजाई पद प्राप्त होता है और जो सौतेले हैं, बलिहार नहीं जाते हैं वो 21 जन्म ही प्रजा में चले जाते हैं। तुम श्रीमत पर चल अपने ही योगबल से राजाई का तिलक लेते हो। यहाँ हथियार आदि की बात नहीं। तुम्हें बुद्धियोग बल से मायाजीत-जगतजीत बनना है।

गीतः- भोलेनाथ से निराला...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) माया पर जीत पाकर हमें श्रीकृष्ण समान जगतजीत बनना है। इस युद्ध के मैदान में सदा विजयी बनना है। हार नहीं खानी है।

2) श्रीमत से स्वयं को विकारों के बंधन और कर्मबन्धन से मुक्त करना है। अशरीरी बनने का अभ्यास करना है। बुद्धियोग की दौड़ी लगानी है।

वरदानः- चेहरे द्वारा सम्पन्न स्थिति की झलक और फलक दिखाने वाले सर्व प्राप्ति स्वरूप भव

संगमयुग के ब्राह्मण जीवन की विशेषता है – सदा सुख-शान्ति के, खुशी के, ज्ञान के, आनंद के झूले में झूलना। सर्व प्राप्तियों के सम्पन्न स्वरूप के अविनाशी नशे में स्थित रहना। चेहरे पर प्राप्ति ही प्राप्ति है, उस सम्पन्न स्थिति की झलक और फलक दिखाई दे। जैसे स्थूल धन से सम्पन्न राजाओं के चेहरे पर भी वह चमक थी, यहाँ तो अविनाशी प्राप्ति है, तो प्राप्तियों की रूहानी झलक और फलक चेहरे से दिखाई दे।

स्लोगनः- खुशनसीब वह है जो सदा खुश रहकर खुशी का खजाना बाँटता रहे।

''मीठे बच्चे – यह ऑलमाइटी गवर्मेन्ट है, बाप के साथ धर्मराज भी है, इसलिए बाप को अपने किये हुए पाप बताओ तो आधा माफ हो जायेगा''

प्रश्नः- राजधानी का मालिक और प्रजा में साहूकार किस आधार पर बनते हैं?

उत्तरः- राजधानी का मालिक बनने के लिए पढ़ाई पर पूरा ध्यान चाहिए। पढ़ाई से ही पद की प्राप्ति होती है। साहूकार प्रजा बनने वाले नॉलेज लेंगे, बीज भी बोयेंगे (सहयोगी बनेंगे), पवित्र भी रहेंगे लेकिन पढ़ाई पर पूरा ध्यान नहीं देंगे। पढ़ाई पर ध्यान तब हो जब पहले पक्का निश्चय हो कि हमें स्वयं भगवान् पढ़ाने आते हैं। अगर पूरा निश्चय नहीं तो यहाँ बैठे भी जैसे भुट्टू हैं। अगर निश्चय है तो रेग्युलर पढ़ना चाहिए। धारण करना चाहिए।

गीतः- नयन हीन को राह दिखाओ प्रभू...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) इस अन्तिम जन्म में पवित्रता की प्रतिज्ञा कर पान का बीड़ा उठाना है। आत्मा को काले से गोरा सतोप्रधान बनाने का पुरुषार्थ करना है।
2) अविनाशी प्रालब्ध बनाने के लिए निश्चयबुद्धि बन पढ़ाई रेग्युलर पढ़नी है। बाकी जो अब तक पढ़ा है वह बुद्धि से भूल जाना है।

वरदानः- विजय के उमंग-उत्साह द्वारा नाउम्मींदी को उम्मीदों में परिवर्तन करने वाले निश्चयबुद्धि भव

अगर निश्चय अटूट है तो विजय सदा है ही, विजय का उमंग-उत्साह सदा रहे, नाउम्मींदी के संस्कार न हों। कोई भी मुश्किल कार्य इतना सहज अनुभव हो जैसे कोई बड़ी बात ही नहीं है क्योंकि अनेक बार कार्य कर चुके हैं, कोई नई बात नहीं कर रहे हैं, इसलिए नाउम्मीदीं का नाम-निशान भी न रहे, कोई भी स्वभाव-संस्कार में यह संकल्प न आये कि पता नहीं यह परिवर्तन होगा या नहीं, हैं ही सदा के विजयी।

स्लोगनः- शक्तिशाली बनना है तो सदा खजानों की स्मृति और सिमरण में रहो।

''मीठे बच्चे – इस ज्ञान में गम्भीरता का गुण धारण करना बहुत जरूरी है, कभी भी अपना अभिमान नहीं आना चाहिए, माताओं का रिगार्ड रखो''

प्रश्नः- सभी बच्चों के प्रति बाप की आश क्या है? वह आश पूरी कब कर सकेंगे?

उत्तरः- बाप की आश है – बच्चे ऐसा पुरुषार्थ करें जो नर से नारायण बनकर दिखायें। इसमें ही बाप का शो होगा। ऐसा शो निकालो जो बाप का भी गायन हो तो बच्चों का भी गायन हो। बाबा कहे– बच्चे, अगर तुम नर से नारायण बनेंगे तो तुम्हारा भी मन्दिर बनेगा और हमारा भी बनेगा। ऐसा पूज्य बनने लिए फॉलो फादर। अपने आपसे प्रण करो – हम पूरा ही फॉलो करेंगे।

गीतः- जिस दिन से मिले हम तुम...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) आपस में एकमत होकर रहना है। एक दो को रिगॉर्ड देना है। रूठकर कभी भी पढ़ाई नहीं छोड़नी है।

2) क्रोध बहुत नुकसान-कारक है, इसलिए जो बात पसन्द नहीं आती है, उसे एक कान से सुन दूसरे से निकाल देना है। क्रोध नहीं करना है। बहुत-बहुत मीठा बनना है।

वरदानः- बुद्धि द्वारा शुद्ध संकल्पों का भोजन स्वीकार करने वाले सदा स्वच्छ होलीहंस भव

होलीहंस कभी भी बुद्धि द्वारा सिवाए ज्ञान के मोती के और कुछ भी स्वीकार नहीं कर सकते। ब्राह्मण आत्मायें जो ऊँच चोटी हैं वह कभी भी नीचे की बातें स्वीकार नहीं करती। होलीहंस अर्थात् सदा स्वच्छ, सदा पवित्र, पवित्रता ही स्वच्छता है। होलीहंस संकल्प भी अशुद्ध नहीं कर सकते। सदा शुद्ध संकल्पों का भोजन खाने वाले होलीहंस सदा तन्दरूस्त रहते हैं। उन पर किसी का प्रभाव पड़ नहीं सकता।

स्लोगनः- अपनी मन्सा द्वारा शान्ति कुण्ड को प्रत्यक्ष करने वाली शान्तप्रिय आत्मा बनो।

''मीठे बच्चे – अर्थ सहित बाप को याद करने से ही तुम्हारे पाप नाश होंगे, आत्मा पतित से पावन बनेगी, नम्बरवन सब्जेक्ट है याद की''

प्रश्नः- मनुष्यों की अर्जी क्या है और बाप उस अर्जी को कैसे पूरा करते हैं?

उत्तरः- मनुष्य बाप से अर्जी करते हैं – ओ गॉड फादर, हमें पापों से मुक्त करो, ओ रहमदिल बाबा, रहम करो। बाबा सभी की अर्जी सुनकर स्वयं आते हैं और पापों से मुक्त होने की युक्ति बताते हैं – बच्चे, तुम मुझे याद करो। सिर्फ बाप की महिमा गाने से कोई फ़ायदा नहीं, चरित्र गाने नहीं हैं लेकिन राजयोग सीखकर चरित्रवान बनना है।

गीतः- भोलेनाथ से निराला...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) ड्रामा के चक्र को यथार्थ रीति समझकर पुरुषार्थ करना है। बाप समान रहमदिल बन सभी पर रहम करना है।
2) बाप सचखण्ड स्थापन कर रहे हैं इसलिए सच्चा होकर रहना है। बाप की याद से आत्मा को स्वच्छ बनाना है।

वरदानः- सेवा की भावना द्वारा अमर फल प्राप्त करने वाले सदा माया के रोग से मुक्त भव

जो बच्चे संगमयुग पर प्रभू फल, अविनाशी फल, सर्व सम्बन्धों के स्नेह के रस वाला फल खाते हैं वे सदा ही माया के रोग से मुक्त रहते हैं। और फल तो सतयुग में भी मिलेंगे और कलियुग में भी मिलेंगे लेकिन सेवा की भावना का प्रत्यक्षफल, प्रभू फल अगर अभी नहीं खाया तो सारे कल्प में नहीं खा सकते। यह फल ईश्वरीय जादू का फल है, जिस फल को खाने से लोहे से पारस तो क्या लेकिन हीरा बन जाते हो। यह फल सर्व विघ्नों को समाप्त करने वाला अमर फल है।

स्लोगनः- अपकारियों पर भी उपकार करने वाले, निंदक को भी मित्र समझने वाले ही बाप समान हैं।

''मीठे बच्चे – प्रतिज्ञा करो–जब तक सतयुगी स्वराज्य स्थापन नहीं हुआ है तब तक हम सुख की नींद नहीं सोयेंगे, पवित्र बनकर सबको पवित्र बनायेंगे''

प्रश्नः- ड्रामा में कौन-सी मौत होना भी जैसे संगमयुग की रस्म है?

उत्तरः- विजय माला में आने का पुरुषार्थ करने वाले अच्छे-अच्छे बच्चे भी आश्चर्यवत् सुनन्ती, कथन्ती फिर भागन्ती हो जाते अर्थात् मर जाते हैं। ऐसी मौत भी संगमयुग की जैसे रस्म बन गई है। श्रीमत पर न चलने से माया हरा देती है। बाप का बनकर हाथ छोड़ा तो गोया मर गया। तकदीर पर लकीर लग जाती है।

गीतः- दर पर आये हैं कसम ले के...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) बाप से पूरा-पूरा लव रख मातेला बनना है। अपना पूरा समाचार बाप को देना है। कभी भी कपूत नहीं बनना है।

2) रक्षा बन्धन का यथार्थ रहस्य बुद्धि में रख पवित्र जरूर बनना है। माया से कभी हार नहीं खानी है। पवित्रता के बल से स्वराज्य लेने की प्रतिज्ञा करनी है।

वरदानः- सदा मिलन के झूले में झूलने वाले तत त्वम् के वरदानी बाप समान भव

जैसे बापदादा आप मालिकों की आज्ञा को मानकर मिलन मनाने के लिए आते हैं, जी हाज़िर का पाठ पढ़कर हाज़िर हो जाते हैं ऐसे ही तत् त्वम्। अमृतवेले से लेकर दिन के समाप्ति तक धर्म और कर्म में बाप समान बनो तो सदा मिलन के झूले में झूलते रहेंगे। इस मिलन के झूले में रहने से प्रकृति और माया दोनों ही आपके झूले को झुलाने वाले दासी बन जायेंगे। सर्व खजाने आपके इस श्रेष्ठ झूले का श्रृंगार बन जायेंगे।

स्लोगनः- सदा ब्रह्मा बाप की भुजाओं में समाये रहो तो सेफ्टी का अनुभव करेंगे।

''संगमयुग उत्सव का युग है – उत्सव मनाना अर्थात् अविनाशी उमंग-उत्साह में रहना''

- आज त्रिदेव रचता त्रिमूर्ति शिव बाप अपने रूहानी डायमण्ड्स के साथ डायमण्ड जुबली वा डायमण्ड जयन्ती मनाने आये हैं। इसी विचित्र जयन्ती को डायमण्ड जयन्ती कहते हो क्योंकि बाप अवतरित होते ही हैं कौड़ी समान आत्माओं को हीरे तुल्य बनाने।
- यथार्थ रीति से उत्सव आप ब्राह्मण ही मनाते हो क्योंकि उत्सव का अर्थ ही है – सर्व उत्साह-उमंग में रहें। बापदादा इस श्रेष्ठ संगमयुग को उत्सव का युग कहते हैं। हर दिन आपके लिये उत्साह सम्पन्न है। हर दिन उत्सव है।
- अगर कोई भी परिस्थिति में व्हाई शब्द आ जाता है तो उमंग-उत्साह का प्रेशर कम हो जाता है। जब व्हाई शब्द आये तो फ्लाय शब्द याद रखो तो व्हाई खत्म हो जायेगा। जब भी हाय-हाय का नज़ारा आवे तो वाह-वाह कर लो तो नज़ारा भी बदल जायेगा और आप भी बदल जायेंगे।
- अगर हलचल में आते हैं तो उसका कारण है – निगेटिव सुनना, सोचना वा बोलना या करना। आपका मन और बुद्धि ऐसा बन जाये जो निगेटिव टच नहीं करे, सेकेण्ड में परिवर्तन हो जाये। मन और बुद्धि ऐसा तीव्र गति का यन्त्र बन जाये।

वरदान:- सम्पूर्णता द्वारा सम्पन्नता की प्रालब्ध का अनुभव करने वाले सर्व झमेलों से मुक्त भव

संगमयुग पर सागर गंगा से अलग नहीं, गंगा सागर से अलग नहीं। इसी समय नदी और सागर के समाने का मेला होता है। जो इस मेले में रहते हैं वह सर्व झमेलों से मुक्त हो जाते हैं। लेकिन इस मेले का अनुभव वही कर सकते हैं जो समान बनते हैं। समान बनना अर्थात् समा जाना। जो सदा स्नेह में समाये हुए हैं वह सम्पूर्णता और सम्पन्नता की प्रालब्ध का अनुभव करते हैं। उन्हें कोई भी अल्पकाल के प्रालब्ध की इच्छा नहीं रहती।

स्लोगन:- सदा एक बाप के श्रेष्ठ संग में रहो तो होलीएस्ट और हाइएस्ट बन जायेंगे।